जहाँ हमारा

दिलीप गो0 दुरबुडे
वैज्ञानिक 'ब'
कठोर शिला क्षेत्रीय केन्द्र, बेलगांव (कर्नाटक राज्य)

कमरा तो एक ही है, कैसे चले गुजारा ।
बीबी गयी थी मैके, लौटी नहीं दुबारा ।
कहते है लोग मुझे शादीशुदा, पर हूँ कुँवारा ।
रहने को घर नहीं, और सारा जहाँ हमारा ।।

महंगाई बढ़ रही है, मेरे सिर पर चढ़ रही है ।
चीजों के भाव सुनकर, हालत बिगड़ रही है ।
कैसे खरीदूं मेवे, मैं खुद हुआ हुँ छुआरा ।
रहने को घर नहीं, और सारा जहाँ हमारा ।।

जिसने भी सत्य बोला, उसको मिली ना रोटी ।
कपड़े उतर गये सब, उसे लग गयी लंगोटी ।।
वह ठंड से मरा है, दीवार के सहारे ।
उस पर लिखे थे दो वाक्य प्यारे-प्यारे ।।

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ता हमारा ।
हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलिस्ताँ हमारा ।।